संपादन एवं संचालन
एकलव्य
ई-10 शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016
फोनः 0755 - 2550976 0755 - 2671017
ई-मेलःsrote@eklavya.in, srotefeatures@gmail.com
www.eklavya.in

स्रोत

विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

सितंबर 2010
वर्ष-4 अंक-8 (पूर्णांक 260)

संपादक
सुशील जोशी

सहायक संपादक
अफसाना पठान
अम्बरीष सोनी

उत्पादन सहयोग
इंदु नायर जितेंद्र ठाकुर
राकेश खत्री कमलेश यादव

वार्षिक चंदा
व्यक्तिगत 150 रुपए
संस्थागत 300 रुपए
एक प्रति 15 रुपए

चंदे की रकम कृपया एकलव्य, भोपाल के नाम बने ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।

कृत्रिम जीवन का नया दौर	डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन	2
वृक्षों में छिपा हुआ है इतिहास	नरेन्द्र देवांगन	4
अवमानना और विज्ञान की प्रगति	पी. बालाराम	6
बृहस्पतिः भारतीय देवताओं का गुरु	विश्व मोहन तिवारी	9
शनिः धीरे चलने वाला ग्रह	विश्व मोहन तिवारी	10
मधुमक्खियों का विचित्र प्रजनन		11
धरती - एक स्पंज की गेंद	एस. अनंतनारायणन	12
मछली खा-खाकर हम बने बुद्धिमान	डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन	14
प्रोटीन की कमी है तो उसका निर्यात क्यों?	भारत डोगरा	16
तैंतालीस हज़ार साल पुराना प्रोटीन		17
कितनी प्रजातियां हैं दुनिया में?		17
उर्वरता महिलाओं के दिमाग को बढ़ाती है		18
फफूंद, फ्लेमिंग और पेनिसिलिन की खोज	नरेन्द्र देवांगन	19
प्लास्टिक से ज़हर की काट		21
आवश्यक है भूजल भण्डारों का पुनर्भरण	डॉ. राम प्रताप गुप्ता	22
पी. सी. वैद्यः भारतीय गणित की विलक्षण प्रतिभा	डॉ. जयंत वी.नार्लीकर	25
सभ्यता का कचरा और कचरे की सभ्यता	सुनील	27
शुक्र : सौन्दर्य की देवी, राक्षसों का गुरु	विश्व मोहन तिवारी	29
लाल मंगलः युद्ध का रोमन देवता	विश्व मोहन तिवारी	30
दूर का ग्रह यूरेनस	विश्वमोहन तिवारी	31
शराब को मिलाएं या हिलाएं?	डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन	32
विश्व बांध आयोग - दस वर्ष बाद	भारत डोगरा	34
एक मक्खी का नाम बदलने को है		35
घोंसला बनाने की कला	नरेंद्र देवांगन	36

स्रोत में छपे लेखों के विचार लेखकों के हैं। एकलव्य का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह मासिक संस्करण स्वयंसेवी संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं व पुस्तकालयों, विज्ञान लेखन से संबद्ध तथा विज्ञान व समाज के रिश्तों में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के विशेष अनुरोध पर स्रोत के साप्ताहिक अंकों को संकलित करके तैयार किया जाता है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। स्रोत का उल्लेख अवश्य करें।